शिक्षा आयोग या कोठारी आयोग-

(Education Commission or Kothari Commission.) — 1964-66

सम्पूर्ण भारत मे एक समान शिक्षा के लिए 14 जुलाई 1964 को शिक्षा आयोग का गठन किया गया। इसके अध्यक्ष डी. एस. कोठारी थे।

(A) शिक्षा आयोग के उद्देश्य एवं कार्यक्षेत्र — सरकार ने स्पष्ट किया कि आयोग शिक्षा के सभी स्तरो प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च तीनो पर अपना सुझाव दे।

आयोग के उद्देश्य एवं कार्यक्षेत्र इस प्रकार थे —

1- तत्कालीन शिक्षा प्रणाली का अध्ययन कर उसके प्रति असन्तोष का कारण पता करके सुधार का सुझाव दे।

2- सम्पूर्ण देश मे समान शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध मे सुझाव देना।

3- शिक्षा की व्यवस्था एवं प्रशासन सम्बन्धी नीति सुनिश्चित करने के सम्बन्ध मे सरकार को सुझाव देना।

4- प्रत्येक स्तर की शिक्षा के प्रसार एवं उसके गुणात्मक सुधार के सम्बन्ध मे सरकार को सुझाव देना।

Scanned with CamScanner

आयोग का प्रतिवेदन
(Report of the Commission)

आयोग ने इस कार्य को पूर्ण करने हेतु कार्यकारी दल बनाये। इसके बाद आयोग ने 29 जून 1966 को तत्कालीन केंद्रीय शिक्षा मंत्री M.C. Chhagla के समक्ष प्रस्तुत किया। यह प्रतिवेदन 692 पृष्ठों का था जो तीन भागों में विभाजित था। और इसका नाम है।
"राष्ट्रीय शिक्षा और विकास"।

शिक्षा आयोग की सिफारिशें एवं प्रभाव

आयोग ने सम्पूर्ण भारतीय शिक्षा पद्धति का अध्ययन किया और उसके पुनर्गठन हेतु अपने सुझाव दिये जो इस प्रकार हैं।

(i) **शिक्षा की संरचना — (Structure of Education)**

(A) प्राथमिक शिक्षा की नवीन संरचना —
- 2 या 3 वर्ष की निम्न माध्यमिक शिक्षा
- 3 वर्ष की उच्च प्राथमिक शिक्षा
- 4 या 5 वर्ष की ~~उच्च~~ निम्न प्राथमिक शिक्षा
- 1 या 3 वर्ष की पूर्व विद्यालय शिक्षा

आयोग ने स्पष्ट किया कि सामान्य शिक्षा (10 वर्ष) प्रारम्भ करने से पूर्व एक से तीन वर्ष की पूर्व प्राथमिक (Pre-Primary) शिक्षा दी जाये।

प्राथमिक शिक्षा के दो भाग —
(a) 4 से 5 वर्ष (निम्न)
(b) 3 से 4 वर्ष (उच्च)

माध्यमिक शिक्षा की संरचना -

(i) निम्न माध्यमिक शिक्षा की अवधि -
2 या 3 वर्ष की।

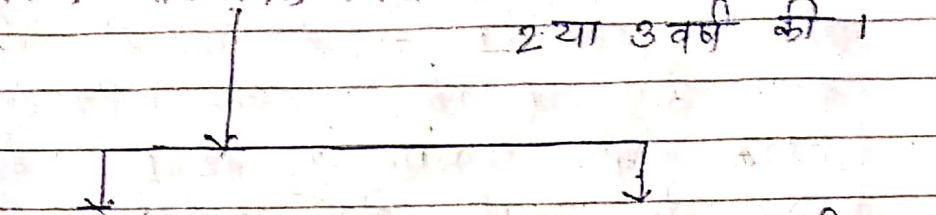

(ii) उच्चतर माध्यमिक शिक्षा की अवधि —
2 या 3 वर्ष की।

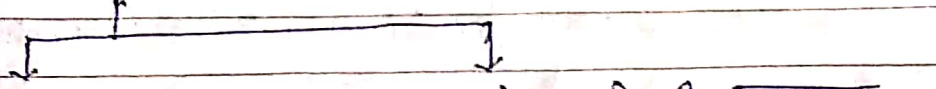

उच्च शिक्षा की संरचना

उच्च शिक्षा की संरचना आयोग ने निम्न प्रकार से प्रस्तुत की।

(i) 3 वर्ष का प्रथम डिग्री कोर्स
(ii) 2 या 3 वर्ष का द्वितीय डिग्री कोर्स
(iii) 2 या 3 वर्ष का अनुसंधान

शिक्षा के स्तर - (Levels of Education)

1- विद्यालयी शिक्षा 10 वर्ष की में गुणात्मक उन्नति की जाये।

2- विश्वविद्यालयों की उपाधियों के स्तर में सुधार।

3. शिक्षा के विभिन्न अंगों में समन्वय स्थापित किया जाये।

4. "विद्यालय संकुलों" का निर्माण।

Scanned with CamScanner

शिक्षा के उद्देश्य एवं लक्ष्य
(Aims and Objectivies of Education)

शिक्षा द्वारा उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु आयोग ने 'पंचमुखी' कार्यक्रम का विचार दिया जो इस प्रकार है —

(1) **शिक्षा व उत्पादन** - आयोग ने शिक्षा द्वारा उत्पादन में वृद्धि के लिए निम्न सुझाव दिये।

(a) विज्ञान की शिक्षा को उच्च तथा माध्यमिक दोनों में अनिवार्य किया जाये।

(b) कार्यानुभव का सम्पूर्ण शिक्षा का विशिष्ट अंग बनाना चाहिए।

(c) उच्च शिक्षा में तकनीकी तथा कृषि शिक्षा पर बल दिया जाये।

(2) **सामाजिकता तथा राष्ट्रीय एकता** —

(i) शिक्षा के सभी स्तरों पर राष्ट्र सेवा को अनिवार्य बनाया जावे।

(ii) सामान्य विद्यालय पद्धति को राष्ट्रीय लक्ष्य माना जाये।

(iii) मातृभाषा को शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम बनाया जाये।

(iv) पाठ्यक्रम में संविधान लोकतन्त्र नागरिकता के सिद्धान्त को महत्व दियां जाये।